(April 2024). स्त्री शिक्षा के प्रति बदलता दृष्टिकोण - समकालीन लेखिकाओं के संदर्भ में
International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

स्त्री शिक्षा के प्रति बदलता दृष्टिकोण - समकालीन लेखिकाओं के संदर्भ में

डॉ. एकादशी जैतवार
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
डॉ. एस. सी. गुलहाने प्रेरणा वाणिज्य, विज्ञान व कला महाविद्यालय, नागपुर

शिक्षा का किसी भी समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। नवजागरण काल में समाज सुधारकों ने नारी शिक्षा पर बल दिया । राजा राममोहन राय, केशव चंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, पंडिता रमाबाई, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, महर्षी कर्वे आदि ने स्त्री को न केवल शिक्षित किया बल्कि आर्थिक रूप से स्वावलंबी भी बनाया ।अनाथ, परित्यक्ता, विधवा आदि उपेक्षिताओं के प्रति इन्होंने अधिक ध्यान दिया। परिणामत: वर्तमान युग में स्त्री का आत्मबोधन बढ़ा। उसे अपने अस्तित्व का भान हुआ उसने न केवल अपनी क्षमताओं को पहचाना, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया ।शिक्षा के प्रसार के कारण नारी जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। स्त्री की दृष्टि सामाजिक विषमताओं की ओर जाने लगी। उसने महसूस किया कि जब तक वह अशिक्षित, आर्थिक दृष्टि से पराधीन रहेगी, तब तक उसे नरकीय जीवन बिताना पड़ेगा। वह अनुभव करने लगी की आर्थिक सत्ता के आधार पर पुरुषों ने उसे गुलाम बनाया है।इसीलिए आधुनिक नारी अर्जित शिक्षा और स्वतंत्रता के बल पर आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनने लगी। "स्पष्टत: नारी स्वाधीनता के प्रश्न को भारतीय नवजागरण में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ और इसमें प्रखरता तब और आई जब स्त्री उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाली तेजस्विनी महिलाएं सामने आयीं। 'वुमेन राइटिंग इन इंडिया' से पता चलता है कि 1882 के आसपास बंगाल की मोक्षदायिनी मुखोपाध्याय एवं महाराष्ट्र की ताराबाई शिंदे ने अपने लेखन से पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों की तीखी आलोचना की थी। इधर हाल में डॉ. धर्मवीर के खोजी प्रयास से 'सीमंतणी उपदेश' नाम के पुस्तक प्रकाश में आयी है जो 1882 में प्रकाशित हुई थी। डॉ धर्मवीर के अनुसार इस पुस्तक की लेखिका एक अज्ञात हिंदू विधवा है । इस पुस्तक में सती-प्रथा का सशक्त विरोध है, वैधव्य-जीवन की दुर्दशा का मार्मिक वर्णन है, पतिव्रता तथा सतीत्व संबंधी भ्रामक विचारों का जोरदार खंडन है। साथ ही, धर्म के नाम पर स्त्री की दासता के लिए गढ़े गए प्रपंचों का तार्किक दृष्टि से गहरी पड़ताल करते हुए प्रत्याख्यान किया गया है। जाहिर है कि 19वीं सदी में सीमित स्तर पर ही सही, भारतीय महिलाओं में जागरूकता का जो तेवर उभरा, उसके तार्किक परिणीति के रूप में ही उनकी भागीदारी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हुई।आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता का ही परिणाम था कि उन्हें स्वतंत्र भारत के संविधान द्वारा पुरुषों के समक्ष समस्त मौलिक अधिकार प्रदान किए गए। " १ स्वावलंबन स्त्री में स्वाभिमान पैदा करता है और स्वाभिमान उन्हें चेतना से संपन्न करता है और यही चेतना उनके सामर्थ्य का निर्माण करती है। 'स्त्री समाज की चेतना का विकास कर सकेंगी। अभी इसमें एक लंबी, बीहड़ यात्रा तय करनी हैं।'समाज में स्त्री के प्रति गैर-बराबरी का भाव विद्यमान रहा है। अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़ मान्यताएं आदि इसके लिए जिम्मेदार

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

मानी जाती रही हैं। बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दशकों तक भारतीय संदर्भ में भी स्त्री की सामाजिक भूमिका प्रायः हाशिए पर ही रही है। स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार और दमन का परिणाम है आज स्त्री अपने अस्मिता को पाने के लिए उठ खड़ी हो गई है। सदियों से चलते आ रहे मौन को अभिव्यक्ति देता है तथाकथित पितृसतात्मक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करता है। महिला लेखन आत्माभिव्यक्ति का ऐसा हथियार है जिसके द्वारा स्त्री ने समाज के दोहरे मापदंडों, पक्षपाती कानूनों और अमानवीय परिस्थितियों की सच्चाई को बेपर्दा किया है। मृदुला गर्ग ,चित्रा मुदगल ,ममता कालिया, नासिरा शर्मा, सुधा अरोड़ा , मालती जोशी , शिवानी आदि की रचनाओं ने स्त्री के प्रति अपनी लेखकीय प्रतिबद्धता का निर्वाह किया । सत्य है कि नारी को विशेष सुविधाएँ प्रदान कर ,आत्मनिर्भर बनाने का प्रयत्न वर्तमान शासन व्यवस्था ने किया है । महिलाओं में जागरूकता,शिक्षा,आर्थिक स्तर एवं कार्य स्तर में विकास हुआ है। भारत में उद्यमी व कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई हैं । महिलाओं में लघुउद्योग,हस्तशिल्प,तथा लोककलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने कई योजनाएं बनायी हैं।

समाज में स्त्री की समस्या का कारण पुरुष नहीं बल्कि उसकी अशिक्षा है जिसका हल पुरुष सत्ता से मुक्ति नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व का विकास है। आज कल महिलाओं की निर्णय में भागीदारी बढ़ रही है,पहले परिवार, समुदाय,समाज के समारोह,सभाओं और आयोजनों में पुरुष का प्रभुत्व होता था, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में भी महिलाएँ रुचि नहीं लेती थी, अपने स्वास्थ्य की उन्हें चिंता नहीं थी और न ही विज्ञान व तकनीकी जानकारी में उनकी हिस्सेदारी थी। वास्तव में नारी की दुश्मनी उन बिंदुओं से है जो स्त्री को स्त्री होने के कारण उसे शोषित करते हैं। लड़के लड़की में भेद भाव पहले पढ़ाई लिखाई में ही नहीं था बल्कि खाने पीने में भी किया जाता था। कच्ची उम्र में लड़की के सिर पर अधिक बोझ लाद देते थे, घर की सफ़ाई ,रसोई में माँ की सहायता,छोटे भाई बहन की देखभाल ,लड़की को ही करनी पड़ती थी ।तेलगू भाषा की कहावत है, 'बेटी का लालन पालन करना पड़ोसियों के पेड़ को पानी देने के समान है।' एक और विडंबना समाज को अस्थिर तथा असंतुलित कर रही है और वह है परिवारों का टूटना,तलाक़ की बढ़ती संख्या, बच्चों तथा किशोरों में पनपता अकेलापन, अविवाहित रहने की युवक युवतियों की चाह ने पुनः नारी विमर्श से जुड़े कई विध्वंसक पहलुओं को भी उपस्थित किया है।नारी ने सर्वोत्तम कुटुम्ब दिए जिसमें बच्चों तथा बूढ़ों की अच्छी परवरिश हुई किन्तु आज उसके पास दफ़्तर की फाइलें, सुबह से रात तक बाहर की चुनौतियाँ इतनी अधिक है कि अपने अस्तित्व, वैयक्तिकता, महत्वाकांक्षा के बीच विवाह , पति,परिवार का निर्वाह करना उसे अपनी स्वतंत्रता में बाधक जान पड़ता है।नारीवादी आंदोलन ने नारी की आज़ादी की चाहत को पंख दिए। अलका सरावगी,मधुकांकरिया,गीतांजलीश्री,जयाजादवानी आदि लेखिकाओं ने लेखन के माध्यम से ही स्त्री शिक्षा पर बल दिया। प्रभा खेतान रचित 'पीली आंधी' की नायिका सोमा संयुक्त परिवार की मान-मर्यादा, नैतिकता को लांघती है। वह आधुनिक पढ़ी-लिखी प्रगतिशील स्त्री है। 'रुंगटा हाउस' के घुटनपूर्ण वातावरण में वह रहना नहीं चाहती, आगे पढ़ना चाहती है। ताई जी से अनुमति प्राप्त करना चाहती है, "ताई जी, मैं आगे पढ़ना चाहती हूं।"२ उसे पढ़ाने के लिए प्रोफेसर सुजीत सेन की नियुक्ति होती है। उसके पति तथा घर वालों को यह बात पसंद नहीं आती,वे सोमा का विरोध करते हैं। परंतु सोमा अपने निश्चय पर दृढ़ है । "मैं अपने पैरों पर

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

खड़ी हो सकती हूं। शायद इस घर से बाहर, गौतम तुमको एक हजार रूपये की नौकरी नहीं मिले, लेकिन मुझे मिल जाएगी।"३ शिक्षा की वजह से उसमें आत्मविश्वास आ जाता है। वह अपने समलैंगिक पति, रुंगटा हाउस और वहां की जायदाद पर लात मारती है और सुजीत के पास चली जाती है । शिक्षा के कारण ही वह अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम होती है।

'कठगुलाब' उपन्यास की सभी नायिकाएं स्मिता, मारियन और मर्यादा अपने ही रिश्तेदारों से शोषित पीड़ित हैं। वे शिक्षा के महत्व को पहचानती हैं। वे पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं। उपन्यास की नायिका स्मिता अपनी बहन के यहां आश्रिता है । बहन को स्मिता की शादी की चिंता है। स्मिता का कहना है," कमाई करूंगी तो शादी बिना दहेज होनी आसान हो जाएगी।"४ स्मिता सब चिताओं से मुक्त होकर, "पढ़ाई करने में जुट गई । शादी के बाजार में भाव बढ़ाने के विचार से नहीं, आगे पढ़ाई करके नौकरी करने के इरादे से। बी.एस.सी. में उसकी प्रथम श्रेणी आई।"५ स्मिता आगे पढ़ना चाहती है लेकिन बहन मना करती है ,"तेरे जीजाजी नहीं मानेंगे । आगे पढ़ाई का खर्चा— वह कहती है सिर्फ एक बार दाखिले की फीस भर दो। फिर स्कॉलरशिप मिल जाएंगी । मैं वापस कर दूंगी ।"६ इसी बीच जीजाजी स्मिता के साथ बलात्कार करता है । प्रतिशोध में स्मिता घर छोड़कर सहेली असीमा के घर चली जाती है । एम.एस.सी. (होम साइंस) के बजाय एम.ए. (अर्थशास्त्र) में प्रवेश लेती है। स्कॉलरशिप प्राप्त करने के लिए स्मिता जी तोड़ मेहनत करती है । जीजाजी के विरुद्ध मन में इंतक़ाम की ज्वाला भी धधकते रखती है , "एक दिन—- वक्त आने पर—-- ताकतवर हो लेने पर—-- बहुत जल्दी मैं ठीक ऐसे ही नर पिशाच को उनके किए की सजा दूंगी।"७ शिक्षा के कारण ही उसे अमेरिका जाकर अधिक समृद्ध होने की प्रेरणा मिलती है। 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास की नायिका कविता पढ़ी-लिखी उच्च शिक्षित है। पति संदीप आई.ए.एस. अधिकारी है । वह घर बैठे बोर होती है इसलिए एक महाविद्यालय में लेक्चरशिप करती है। वह खुश है क्योंकि, "हर व्यक्ति का मानसिक ढांचा एक खास तरह की दिनचर्या के लिए बना होता है और कविता का ढांचा अकादमिक जिंदगी के लिए बना था । किताबें पढ़ना, लेक्चर तैयार करना, सेमिनार अटेंड करना, भाषण देना और घंटों खाली लेटना इसी जिंदगी के अंतर्गत आने वाली क्रियाएं थी। वह एक तरह से वापस अपना प्रिय माहौल पाकर मगन हो गई।"८ अर्थात कविता को अपने जीने का मकसद मिल गया। 'आवा' उपन्यास की नमिता को आर्थिक मजबूरी के कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ती है । लेकिन वह हार नहीं मानती," इस साल ही मीठीबाई कॉलेज से बी.ए. पार्ट टू किया है मैंने। अब आगे की पढ़ाई संध्याकालीन कक्षाओं में दाखिला लेकर पूरी करने का इरादा है।९ उसने शॉर्टहैंड और टाइपिंग का कोर्स भी किया है । मैडम वासवानी के कारण वह लिपिक बन जाती है और आभूषणों के लिए मॉडलिंग का काम भी करती है। वह शिक्षा के बल पर ही आर्थिक अभाव को दूर करती है।

शिक्षा का यह एहसास केवल शहरी स्त्रियों में ही दिखाई नहीं देता बल्कि इस संदर्भ में ग्रामीण आदिवासी स्त्रियां भी जागृत हुई हैं। वे जानती है कि पढ़े-लिखे बच्चे ही उनका भविष्य है। अतः काफी कष्ट उठाकर अपने बच्चों को पढ़ाती है। बिरादरी वालों से संघर्ष करती है लेकिन हिम्मत नहीं हारती । 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में अपराधी समझी जाने वाली जनजाति का चित्रण है। उपन्यास में भूरीबाई,कदमबाई के संघर्ष की कहानी हैं। भूरी अनपढ़ है, परंतु अपनी आंखों में शिक्षा का सपना पालती हैं। भूरी का पति अर्जी लिखवाकर बेकसूर को

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

कसूरवार साबित कराने की कोशिश में कचहरी के सामने मारा जाता है। भूरी अपनी आंखों से देखती हैं। वह कसम खाती है," मैं अपने मर्द की ब्याहता खुद को तब मानूंगी जब रामसिंह को पढ़ा लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे खड़ा कर दूंगी । भले इस सफर में मुझे दस मर्दों के नीचे से गुजरना पड़े।"१० बस्ती की सबसे पहली मां है भूरी, जो अपने बेटे के हाथ में कुल्हाड़ी-डंडे की जगह पुस्तक पकड़ाती है। इसके लिए," माते, पुजारी, सिपाही, मास्टरों के जरिए रामसिंह के लिए इज्जत खरीदने वाली मां बेहिचक बेइज्जत होती रही है।"११ रामसिंह ब़ड़ा होकर स्कूल में मास्टर बनता है, वह हिंदी ,गणित, भूगोल आदि विषय पढ़ाता है। अपनी बेटी अल्मा को शिक्षित करता है, ताकि बेटी क्रूर और जलालत भरी जिंदगी से बाहर निकल सके । अल्मा को अंग्रेजी आती है । वह किताब में से शब्द ही नहीं वाक्य भी पढ़ लेती है। इसी कुनबे की कदमबाई अपने बेटे राणा को रामसिंह के पास पढ़ने भेजने का हौसला जुटाती है। शिक्षा की वजह से ही स्त्री आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन पाई है। उसने महसूस किया है कि आर्थिक स्वावलंबन से ही पुरुष दास्तान से मुक्ति पाई जा सकती है। समाज में अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाया जा सकता है।अब तक की स्थिति ऐसी थी कि पुरुष अर्थार्जन करता था और नारी घर परिवार संभालती थी। वस्तुत: दोनों कार्य परस्पर पूरक थे, परंतु आर्थिक सफलता के कारण पुरुष का वर्चस्व बढ़ा। पुरुषों के द्वारा डाले गए टुकड़ों पर पलने के लिए वह मजबूर बनी। आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने से घर परिवार छोड़कर वह कहीं भी नहीं जा सकती थी। अत्याचार सहने के लिए बाध्य हो गई थी। परंतु आज वह आत्मविश्वासी बन गई है। वह सच्चे अर्थ में सहयोगिनी, सहधर्मचारीणी बनना चाहती है। उसके लिए अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। अपना और परिवार का आर्थिक स्तर बढ़ाना चाहती है। आर्थिक स्वतंत्रता उसका मानवीय अधिकार है। स्त्री स्वयं अपनी सुरक्षा की बागडोर पुरुषों के हाथों सौंप देती है जबकि वह घर-परिवार में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में सक्षम है,वह स्वयं अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती है,उसमें आत्मविश्वास है,क्षमता है,साहस है। अपने हक के लिए आवाज़ उठाने की सोच भी है ।नारी की प्रगतिशील सोच व स्वतंत्रता की चाह साहित्य के आरंभिक युग से लेखनीबद्ध होती रही। कबीर,निराला,मैथिली शरण गुप्त आदि साहित्यकारों ने नारी का मूल्यांकन “एक नहीं दो दो मात्राएँ,नर से बढ़कर नारी “ कहकर ठीक ही किया ।स्वयं नारी ने भी अपने जीवन के अनुभव तथा ,सच से जुड़े पहलुओं को बड़े साहस के साथ अपनी आत्मकथा के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखा जिनमें अमृता प्रीतम, प्रभा खेतान,मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में व्यक्त बोल्डनेस पाठक को चौंका देती है।समय के साथ स्त्री ने करियर के क्षेत्र में नई भूमिकाएं प्राप्त की है ।नारी की प्रगतिशील भूमिका,उसे संविधान प्रदत्त विशेषाधिकार, विविध सरकारों की लाभकारी योजनाएँ ,महिला विकास के लिए बदलते क़ानून नारी विमर्श के अंतर्गत स्पेस ढूँढ रहे हैं । साहस के साथ स्त्री समस्याओं को उठाया जा रहा है किंतु एसिड कांड,नारी के सार्वजनिक अपमान एवं उसके साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म जैसी सामाजिक विसंगतियों के चित्रण के साथ यह भी ज़रूरी है कि नारी की शैक्षिक,आर्थिक,राजनीतिक उन्नति का भी खुलकर व्यापक स्वागत हो। निस्संदेह स्त्री अपने लिए जीना चाहती है,वह भी अपने आत्म बोध के साथ। इस चक्कर में वह मकड़ जाल में फँसती जा रही है, कभी अर्थतंत्र की साजिशों के कारण,कभी बाज़ार के शो रूम में सजने के लिए।तात्पर्य यह कि नारी के लिए अपनी शर्तों पर जीना दूभर हो रहा है। निश्चित रूप से आज़ नारी संबंधी कई वर्जनाएं टूटी हैं,समाज का नजरिया भी बदला

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

है,समाज की विसंगतियों से नारी सार्थक लड़ाई भी लड़ रही है,औरतें न तो पुरुषों से कम हैं, न कमज़ोर पर क्या सचमुच नारीवादी आंदोलन ने नारी के हर वर्ग में चेतना जगायी है? कई विश्वविद्यालयों में स्त्री अध्ययन को एक विषय के तौर पर पढ़ाने की भी व्यवस्था हुई, ये सभी नारी विमर्श की दिशा के सकारात्मक पहलू हैं परंतु इससे व्यक्तिगत तथा समाज गत आचरण में कितना बदलाव आया है,शिक्षा,रोज़गार,विवाह,जीवनशैली संबंधित निर्णय लेने में स्त्री कितनी स्वतंत्र हुई है? कहीं ऐसा तो नहीं कि नारीवाद केवल अपने लाभ के लिए चलाया गया आंदोलन बन कर रह गया और कुछ सुधारवादी मुहिम चलाकर, राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का विकल्प बन कर रह गया हो। भारत में प्राचीन काल से ऋषियों एवं महापुरुषों ने अनेक सुधारवादी मुहिम चलाकर न केवल स्त्रियों के उत्थान तथा उद्धार की बात की बल्कि आज़ादी के आंदोलन के दौरान स्त्रियों को राष्ट्र के विकास की प्रेरक शक्ति माना। केवल पुरुष वाद का विरोध नारी विमर्श के केन्द्र में नहीं रहना चाहिए, इससे नारी मुक्ति का अभियान व्यावहारिक नहीं बनाया जा सकता महिला चेतना का शंखनाद हो चुका है । भारत अर्धनारीश्वर की मान्यता वाला देश कहा जाता है, नारी विमर्श पर लिखने वाले रचनाकारों का दायित्व है कि स्त्रियों के अधिकार और बराबरी की माँग करने वाले विषय से ऊपर उठकर राष्ट्र के विकास में उनकी भागीदारी,स्वास्थ्य,शिक्षा,सुरक्षा एवं उनकी मानवीय गरिमा की रक्षा करने वाले मुद्दों पर भी विचार होना चाहिए।

निष्कर्ष- आत्मनिर्भरता के कारण वह अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग हुई है। उसमें नया आत्मविश्वास आया है ।स्वाभिमान से जीने की प्रवृत्ति बढ़ी है। अपने अस्तित्व की, अपने 'स्व' की वह रक्षा करना चाहती है । वर्तमान स्त्री आर्थिक रूप से निर्भर हो रही है। अपनी नई पहचान बना रही है। आज की स्त्री अपने व्यक्तित्व को जानने लगी है। वह नई दिशा की ओर प्रेरित होने के लिए नई संकल्प शक्ति के साथ जीने की ज़िद में जुटी हुई है। आज आर्थिक स्वावलंबन के विविध पर्याय उसके सामने हैं। वह विविध क्षेत्रों में अर्थार्जन के प्रयास कर रही हैं। सेल्सगर्ल से लेकर प्रबंधक पद पर, क्लर्क, रिसेप्शनिस्ट से लेकर उच्चतम सरकारी ओहदों पर, प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका से लेकर विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका तक के रूप में और निजी तौर पर डॉक्टरी से लेकर हॉस्पिटल सुपरीटेंडेंट के पदों पर काम कर रही है। स्त्री ने हर क्षेत्र में सफलता पाई है। राजनीतिक क्षेत्र में इंदिरा गांधी से लेकर प्रतिभा पाटिल तक, आकाश अनुसंधान की यात्रा में कल्पना चावला से सुनीता विलियम्स, खेलों में पी.टी. उषा से लेकर सानिया मिर्जा तक तथा व्यवसाय में कारपोरेट जगत में ऊंचे स्थान तक पहुंची है। साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त नारी अपने नए उत्तरदायित्व का अनुभव करने लगी है शिक्षा और स्वावलंबन के कारण स्त्री में आत्मविश्वास बढ़ा है। जिससे वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम है।

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(04) 145-150
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROUP II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

संदर्भ-

वागर्थ, संपादक रवींद्र कालिया, 2004, पृष्ठ संख्या- 25

प्रभा खेतान- पीली आंधी, पृष्ठ संख्या- 231

वहीं, पृष्ठ संख्या- 231

मृदुला गर्ग- कठगुलाब, पृष्ठ संख्या- 15

वहीं, पृष्ठ संख्या- 14

वहीं, पृष्ठ संख्या- 14

वहीं पृष्ठ संख्या- 24

ममता कालिया- एक पत्नी के नोट्स, पृष्ठ संख्या- 26

चित्रा मुद्गल- आवां,पृष्ठ संख्या- 19

मैत्रेयी पुष्पा- अल्मा कबूतरी, पृष्ठ संख्या- 74

वहीं, पृष्ठ संख्या- 27

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27 Jan 2024, Revised: 09 Feb2024, Accepted: 18 March 2024, Published: April 2024